SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उपन्यास ''मैला आँचल'' में लोक संस्कृति और भाषा

राजेश्वरी चंद्राकर, Ph.D., हिंदी विभाग
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा (राजिम), रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
राजेश्वरी चंद्राकर, Ph.D.
E-mail : drrajeshwarichandrakar@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/07/2024
Revised on : 10/09/2024
Accepted on : 19/09/2024
Overall Similarity : 00% on 11/09/2024

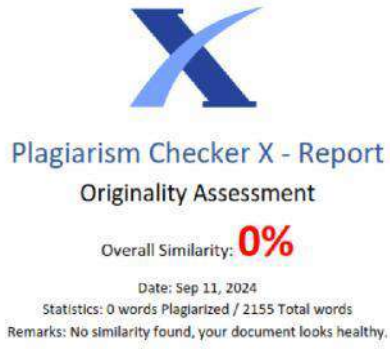

शोध सार

अंचल विशेष की लोक संस्कृति का चित्रण आंचलिक उपन्यास की विशेषता है। लोक संस्कृति की विविध आयाम–लोक कथा, लोकगीत, लोक नृत्य, पर्व त्यौहार, लोक विश्वास, लोक भाषा आदि ही अंचल के जनमानस को यथार्थ रूप में साकार करते है। ये समस्त तत्व केवल लोकजीवन की पहचान ही नहीं उसकी आत्मा हैं। हमारे समाज में लोक–जीवन के जितने रंग हो सकते है उन सारे रंगों के साथ मैला आँचल हमारे सामने उपस्थित है। रेणु के ही शब्दों में कहे तो–''इसमें फूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी, मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''

मुख्य शब्द

मैला आँचल, संस्कृति, भाषा, विश्वास.

'मैला आँचल' हिन्दी के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु का 1954 ई. में प्रकाशित आंचलिक उपन्यास है जिनकी भूमिका में वे लिखते है: ''यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया..... .....मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवो का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है।''[1] इसे हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जाता है।

आँचलिक उपन्यास के मुख्य रूप से दो प्रधान लक्षण माने जाते हैं:

1. किसी क्षेत्र विशेष के आचार–विचार, रहन–सहन खान–पान, रीति–रिवाज आदि का यथार्थ चित्रण होता है।
2. उसी क्षेत्र विशेष की बोली शब्दों मुहावरों में प्रचलित लोकगीतों का प्रयोग होता है।

इस प्रकार आंचलिक उपन्यास के मुख्य तत्व संस्कृति व भाषा से संबंधित है। उपर्युक्त दोनों तत्वों में से पहला तत्व संस्कृति की ओर संकेत करता है तो दूसरा तत्व भाषा की ओर।

मैला आँचल उपन्यास में दोनों तत्वों का सुंदर समावेश मिलता है। इस तथ्य को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है –(क) मैला आंचल में अंचल अर्थात् क्षेत्र–विशेष का आग्रह (ख) मैला आंचल में क्षेत्र–विशेष व जनजीवन की यथार्थ झांकी (ग) मैला आँचल में क्षेत्र–विशेष के शब्दों व मुहावरों का प्रयोग।

(क) मैला आंचल में अंचल अर्थात् क्षेत्र विशेष का आग्रह है।

अंचल अर्थात् क्षेत्र विशेष का आग्रह आंचलिक उपन्यास का प्रधान लक्षण है। आंचलिक उपन्यास में जिस अंचल या क्षेत्र का चित्रण किया जाता है उस अंचल–विशेष का यथार्थ अंकन किया जाता है। उस अंचल–विशेष के दीन–हीन, दलित, पीड़ित, शोषित, उपेक्षित, तिरस्कृत जीवन की वास्तविक झांकी प्रस्तुत की जाती है।

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित मैला आंचल में बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गांव के अंचल के जीवन का यथार्थ वर्णन है। रेणुजी ने मेरीगंज का परिचय देते हुए एक स्थान पर लिखा है –''मेरीगंज एक बड़ा गांव है, बारहों बरन के लोग रहते हैं। गांव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते है। बरसात में कमल भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े–बड़े गड्ढों में पानी जमा रहता है– मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गड्ढे।''[2]

उपन्यासकार इस तथ्य का भी उद्घाटन करता है कि इस गांव का नाम मार्टिन ने अपनी नई दुल्हन मेम मेरी के नाम पर मेरीगंज रख दिया था। मार्टिन ने रौताहट स्टेशन से मेरीगंज तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से सड़क बनवाई तथा मेरीगंज में पोस्ट आँफिस खुलवाया। इसके पश्चात् मार्टिन अपनी नवविवाहित पत्नी मेम मेरी को लाने के लिए कोलकाता गए। लेकिन मेरीगंज पहुंचने के ठीक एक सप्ताह बाद मेरी को 'जड़ैया' ने जकड़ लिया और एक सप्ताह के भीतर चल बसी। मार्टिन साहब ने महसूस किया कि पोस्ट आँफिस से पहले यहां डिस्पेंसरी खुलवाना अत्यंत आवश्यक है। अतः डिस्पेंसरी खुलवाने के लिए मार्टिन अथक प्रयास करता है।

उपन्यास का आरंभ मेरीगंज गांव में मलेरिया सेंटर खुलने की व्यवस्था से होता है। गांव वाले अशिक्षित व अज्ञानी होने के कारण मलेरिया वालों को मलेटरी वाले मान लेते है। गांव में राजपूत, ब्राह्मण, कायस्थ लोग रहते हैं। लोगों में आपसी फूट हैं, झगड़े होते रहते हैं। पूरे गांव में केवल दस लोग पढ़े है। गांव की मुख्य पैदावार है – धान, पाट और खेसारी। रबी की फसल भी कभी–कभी अच्छी हो जाती है।

अतः स्पष्ट है कि मैला आंचल में अंचल विशेष का यथार्थ चित्रण है। यहां की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति का यथार्थ अंकन है। गांव के लोग भोले–भाले है। भोले–भाले का अर्थ है – अनपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी।

(ख) ''मैला आँचल'' में क्षेत्र–विशेष व जीवन की यथार्थ झांकी है।

क्षेत्र–विशेष के वातावरण की सृष्टि उपरांत आंचलिक उपन्यासों में जनजीवन की यथार्थ झांकी प्रस्तुत की जाती है। प्रायः जीवन की यह झांकी उस क्षेत्र के लोगों के रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार–व्यवहार, तीज–त्यौहार, मान्यताओं परंपराओं आदि के आधार पर की जाती है। इसे अग्रलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है –1. रहन–सहन, 2. खान–पान, 3. रीति–रिवाज एवं परंपराएं, 4. तीज–त्योहार, 5. लोकगीत।

1. **रहन–सहनः** प्रायः आंचलिक उपन्यासों में यथार्थ का अंकन होता है। ऐसे उपन्यासों में आंचलिक क्षेत्र अत्यंत पिछड़ा हुआ होता है और समाज में अनेक बुराइयां प्रचलित होती है। रेणु कृत मैला आंचल में भी यथार्थ का नग्न चित्रण किया गया है। मैला आंचल उपन्यास बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के एक छोटे से गांव मेरीगंज की कथा है। यहां अज्ञानता व दरिद्रता व्याप्त है। आर्थिक पिछड़ेपन के साथ–साथ मानसिक पिछड़ापन भी है। किसान जी तोड़ मेहनत करते है, परंतु उनकी मेहनत का फल बड़े किसान और महाजन लूट रहे है। दो–तीन किसानों को छोड़कर बाकी सभी किसानों के पास नाम मात्र की जमीन है। वह या तो खेतिहर मजदूर है या बटाई पर खेती करते है। उनकी आर्थिक स्थिति इन पंक्तियों से उजागर होती है– ''उन्हें भरपेट

रोटी नहीं मिलती शरीर ढकने के लिए वस्त्र मयस्सर नहीं है और आवास के नाम पर फूस की झोपड़ी में उनकी सारी जिंदगी कट जाती है।''[3] गांव में बहुत से लोग है जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी में पूड़ी–जलेबी नही चखी। बीमार होने पर भी अधिकतर लोग दवा के पैसे नही जुटा पाते। कुल मिलाकर उनका रहन–सहन बहुत साधारण है और असभ्य कबीलों के लोगों से बेहतर नहीं है।

2. **खान–पानः** मेरीगंज के लोगों का खान–पान अति साधारण है। अधिकांश लोग ऐसे है जिन्होने कभी पूरे वस्त्र नहीं पहने, बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने नए वस्त्र नही पहने। बहुत से ऐसे है जिन्होंने पूड़ी–जलेबी नहीं चखी। जहां तक मैला आँचल की आंचलिकता की बात है इसमें खान–पान का यथार्थ अंकन किया गया है ताकि उस क्षेत्र की तस्वीर पाठकों के सामने आ जाए। ऐसा करते हुए लेखक उस क्षेत्र–विशेष में प्रचलित खानपान की चीजों का वर्णन स्थानीय भाषा में ही करता है। खान–पान के अंतर्गत चरस, गांजा, ताड़ी, चावल का आटा, गुड़, तेल, पूड़ी–जलेबी, मछली, अंडा, रोटी, दूध व चाय आदि का वर्णन करता है। वेशभूषा में खद्दर का कुर्ता, गमछा आदि का वर्णन है। वाद्ययंत्रों में खंजरी, ढोलक, आदि का वर्णन मैला आंचल में मिलता है।

3. **रीति–रिवाज एवं परंपराएः** किसी क्षेत्र विशेष के रीति–रिवाज एवं परम्पराओं का यथार्थ अंकन करना भी आंचलिक उपन्यास की विशेषता है। रेणुकृत मैला आंचल में भी मेरीगंज में प्रचलित रीति–रिवाजों और मान्यताओं– परंपराओं की सुंदर झांकी मिलती है। मेरीगंज गांव में शादी–ब्याह के अवसर पर होने वाली परंपराओं और प्रथाओं का सुंदर वर्णन है। श्राद्ध के समय की जाने वाली क्रियाओं का भी उल्लेख मिलता है। साधु और ब्राह्मण भोज का भी सुंदर वर्णन है। लेखक इस विषय में एक स्थान पर लिखता है –''सबसे पहले काली थान में पूरी चढ़ाई जाती हैं। जंगल के देव–देवी और भूत–पिशाच के लिए। इसके बाद साधु और बाभन भोजन।''[4]

4. **तीज–त्योहारः** किसी अंचल विशेष में मनाए जाने वाले तीज–त्योहार भी उस अंचल की लोक संस्कृति के परिचायक होते हैं। उन त्योहारों को मनाने के रंग–ढंग व तौर–तरीकों से वहां की जीवन–शैली के विषय में पता चलता है।

मैला आंचल उपन्यास में भी लेखक ने मेरीगंज नामक गांव में मनाए जाने वाले त्योहारों का वर्णन किया है। वैसे तो पूरे उपन्यास में अनेक त्योहारों का वर्णन हुआ है परंतु जिस त्योहार ने वहां की संस्कृति को अच्छे से उद्घाटित किया है वह है–होली के त्योहार। रेणुजी ने अपने उपन्यास में होली के त्योहार का बड़ा ही रंगीन चित्रण किया है। मेरीगंज के लोगों के लिए यह त्योहार केवल एक त्यौहार नहीं बल्कि संजीवनी बूटी है। एक स्थान पर लेखक लिखता है – ''मंहगी पड़े या अंकाल हो पर्व–त्योहार तो मनाना ही होगा।''[5] एक अन्य स्थान पर होली के महत्व को उजागर करते हुए लेखक लिखता है–''होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगाकर जाती है।''

''रोनी कराहने के लिए बाकी ग्यारह महीने तो ही है फागुन भर तो हंस लो गो लो।''
''जो जीये सो खेले फाग''[6]

इस प्रकार होली का त्योहार इन लोगों के लिए जीवन का प्रतीक है। यह त्योहार इनके मृतप्राय जीवन में कुछ प्राणों का संचार करता है।

5. **लोकगीतः** लोकगीत व लोक संस्कृति का सृजन 'मैला आंचल' उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक जारी रहता है। उपन्यास के तीसरे अध्याय के अंत में लेखक ने अखाड़े में बजते ढोल का चित्र द्वारा संगीतमय शब्द बिम्ब से खींचा है 'ढाक–ढिन्ना, ढाक–ढिन्ना।' चौथे अध्याय के शुरू में ही ब्रहम बोल में भजन गायन से गीत संगीत दोनों के ही बिम्ब उघाड़े हैः

'जागहु सतगुरू साहेब .....।
.....डिम–डिमिक–डिमिक, डिम–डिमिक–डिमिक।
भोर भयो भव भरम भयानक भानु देखकर भागाजी
ज्ञान नैन साहेब के खुलि गयो, थर–थर कॉपत माया जी।'[7]

भजन गायन में गीत–संगीत दोनों का योग है। रामदास खंजड़ी बजाता है जो स्वर निकलता हैः

'डिम–डिमिक! रून झुनुक–झुनुक!

रेणु ने 'मैला आंचल' में अपने स्त्री पात्रों के मनोभावों को प्रकट करने के लिए भी अंचल के मधुर लोकगीतों का सृजनात्मक उपयोग किया हैः

''माइगे हम न बियाहेब अपन गौरा के जो बुढ़वा होइत जमाई गे, माई।''[8]

लोकगीत लोकसंस्कृति में लोक जीवन का उद्‌घाटन करते है। आँचलिक उपन्यास में यह लोकगीत और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते है। रेणुजी ने अपने उपन्यास मैला आंचल में विभिन्न अवसरों पर गए जाने वाले लोकगीतों का समावेश किया है। इन गीतों में स्वतंत्रता संग्राम का रंग भी है और होली का रंग भी। रेणुजी ने वर्ष का कोई ऐसा विशिष्ट अवसर नहीं छोड़ा जिसका लोक गीत से रंगा चित्रण न किया हो। मैला आँचल में प्रयुक्त कुछ उदाहरणः

आजादी सम्बन्धी लोकगीत

''कहीं पे छापो गंधी महात्मा
चरखा मस्त चलाते है।
कहीं पे छापों वीर जवाहिर
जेल के भीतर जाते है।''[9]

होली संबंधी गीत

''नयना मिलानी करी ले रे सैंया
नयना मिलानी करी ले।
अबकी बेर हम नैहर रहबों
जे दिल चाहे से करी ले।''[10]

मैला आंचल में अंचल की लोकसंस्कृति सजीव मूर्त और जीवंत हो उठी है। रेणु ने उस स्थान की एक–एक चीज का बारीक और सूक्ष्म चित्रण किया है। वहाँ के रहन–सहन, खान–पान, खेलकूद, तीज–त्योहार, रीति–रिवाज आदि का कलात्मक विश्लेषण किया गया है। उस स्थान का भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तमाम प्रसंगो का दिल से वर्णन–विश्लेषण किया है। यही वजह है कि 'मैला आँचल' मेरीगंज का अनूठा सांस्कृतिक दस्तावेज बन पाया है।

लोक संस्कृति के अंतर्गत मछली मारने का, चौत बैसाख–जेठ में तड़बन्ना में तीन आने लवनी का चित्र, माने ताड़ी पीकर नशे में गाना बजाना और इस गाने बजाने में क्रांतिकारी भाव भी शामिल हो जाता हैः

''अरे जिन्दगी है किराँती
किराँती से बिताये जा।
दुनिया के पूंजीवाद को
दुनिया से मिटाये जा।''[11]

वास्तविकता तो यह है कि इन लोकगीतों के कारण ही मेरीगंज की यथार्थ झांकी पाठकों के समक्ष आती है।

(ग) मैला आंचल में क्षेत्र–विशेष के शब्दों व मुहावरों का प्रयोग

लोकगीत, लोकसंगीत, लोककथाओं के माध्यम से रेणु ने 'मैला आंचल' में भाषा की सृजनशीलता प्रकट की है, उनके पात्रों के जन व्यवहार की भाषा में बड़ी सरसता है और शाब्दिक प्रयोग से बड़ी जीवंतता। उपन्यास का आरंभिक वाक्य ही देखिए –'मलेटरी बहरा चेथरू' को गिरफ्तार कर लिया है, यहां 'मलेटरी' शब्द मिलिट्री का जनभाषा में रूपांतरण है।

क्षेत्र–विशेष के शब्दों व मुहावरों का प्रयोग आंचलिक उपन्यास का लक्षण है। मैला आँचल में स्थानीय शब्दों

की भरमार है। इस उपन्यास में जिस क्षेत्र का वर्णन है वहाँ बहुसंख्यक लोग मैथिली बोलते है। अतः उपन्यास में मैथिली शब्दों का आधिक्य है। लोकगीत भी स्थानीय भाषा से लिये गये है जैसे – अटर–पटर, पुच्च–फुच्च, भखर–भखर देखना, उहाल,गुहल, खम्हार आदि। कुछ शब्दों को जानबूझकर विकृत कर स्थानीय रूप दिया गया है, यथा–गंधी महात्मा (गांधी महात्मा), परभू (प्रभु), इस्तरी (स्त्री), विदयारथी (विद्यार्थी), आंडोलन (आंदोलन), बेकूफ (बेवकूफ), सास्तर (शास्त्र), जमाहिरलाल (जवाहरलाल), जायहिन्द (जयहिन्द), इसपिताल (अस्पताल), डागडरबाबू (डाक्टरबाबू) आदि। रेणुजी ने आंचालिक भाषा को इतनी सहजता से अपनी भाषा में खपा दिया है कि उससे एक नयी भाषिक संरचना का बोध होता है। मार्कण्डेय के अनुसार –''रेणु जिस भाषिक संरचना का प्रयोग करते है वह मां के दूध की तरह है।''[12]

निष्कर्ष

इस प्रकार लेखक ने मैला आंचल उपन्यास में लोकसंस्कृति लोक भाषा का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। लोकसंस्कृति का उद्घाटन आंचलिक वातावरण, आचार–विचार, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, तीज–त्योहारों के माध्यम से हुआ है। लोकभाषा का उद्घाटन स्थानीय लोकगीत व स्थानीय स्तर पर प्रचलित शब्दों के माध्यम से हुआ है। वस्तुतः यह उपन्यास केवल मेरीगंज ही नहीं वरन् समस्त मिथिला के लोकजीवन व संस्कृति को पाठको के समक्ष उजागर करता है।

संदर्भ सूची

1. रेणु, फणीश्वरनाथ (1954) *मैला आँचल,* राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, भूमिका।
2. वहीं, पृ. 14।
3. चरण (2020) मैला आँचल उपन्यास में निरूपित लोक संस्कृति, डॉ. चरण का प्रतियोगिता मंच, उच्च शिक्षा विभाग, हरियाणा, पृ. 3।
4. वहीं, पृ. 41।
5. वहीं, पृ. 122।
6. वहीं, पृ. 122।
7. वहीं, पृ. 22।
8. वहीं, पृ. 56।
9. वहीं, पृ. 228।
10. वहीं, पृ. 123।
11. वहीं, पृ. 161।
12. तिवारी, अशोक (2005) *प्रतियोगिता साहित्य सीरीज,* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 128।

****